

Dr. Kumari Priyanka

History department

HD jain college

Notes for pg semester 1

औपनिवेशिक इतिहास लेखन के उद्देश्य एवं प्रभाव पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।

उत्तर:

औपनिवेशिक इतिहास लेखन (Colonial Historiography) वह ऐतिहासिक दृष्टिकोण है जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के काल में भारत के अतीत को ब्रिटिश नीतियों, शासन और वर्चस्व को उचित ठहराने के उद्देश्य से लिखा गया। इस प्रकार का इतिहास लेखन उपनिवेशवाद की वैचारिक परियोजना का एक महत्वपूर्ण अंग था, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज को "अयोग्य", "पिछड़ा" और "अराजक" सिद्ध करके ब्रिटिश शासन की "आवश्यकता" को न्यायोचित ठहराना था।

1. औपनिवेशिक इतिहास लेखन के उद्देश्य

1. ब्रिटिश शासन की वैधता सिद्ध करना:

इतिहास को इस रूप में प्रस्तुत किया गया कि ब्रिटिश शासन ने भारत में "सभ्यता", "कानून" और "व्यवस्था" स्थापित की।

उदाहरण - जेम्स मिल की "*History of British India*" (1817) में भारत को "अंधविश्वासी" और "असभ्य" बताया गया।

2. भारतीय समाज की हीनता दर्शाना:

उपनिवेशवादी इतिहासकारों ने भारत को जातिवाद, धर्मान्धता और निरंकुश राजाओं का देश बताया, ताकि यह स्थापित किया जा सके कि भारतीय स्वयं शासन करने योग्य नहीं हैं।

3. **‘विभाजित करो और शासन करो’ नीति को सुदृढ़ करना:**
हिंदू-मुस्लिम, आर्य-द्रविड़, उत्तर-दक्षिण जैसी कृत्रिम विभाजन रेखाएँ इतिहास लेखन में पैदा की गईं ताकि भारत की एकता कमजोर हो।
 4. **यूरोपीय श्रेष्ठता का प्रचार:**
भारतीय सभ्यता को यूरोपीय सभ्यता से निम्न सिद्ध कर ‘श्वेत व्यक्ति का बोझ’ (White Man’s Burden) जैसी अवधारणाओं को बढ़ावा दिया गया।
-

2. औपनिवेशिक इतिहास लेखन की प्रवृत्तियाँ

1. **ओरिएंटलिस्ट प्रवृत्ति (Orientalist Tradition):**
प्रारंभिक अंग्रेज विद्वानों (जैसे विलियम जोन्स, मैक्समूलर) ने भारतीय ग्रंथों का अध्ययन किया, परंतु वे भी भारतीय संस्कृति को “प्राचीन पर जड़” सिद्ध करने की प्रवृत्ति रखते थे।
2. **एंग्लो-इंडियन या एडमिनिस्ट्रेटिव प्रवृत्ति:**
यह प्रवृत्ति ब्रिटिश अधिकारियों (जैसे जेम्स मिल, एलफिंस्टन, टॉड) द्वारा अपनाई गई जिन्होंने इतिहास को औपनिवेशिक प्रशासन के औचित्य के लिए प्रयोग किया।
3. **मिशनरी प्रवृत्ति:**
मिशनरियों ने भारत के धार्मिक और सामाजिक जीवन को अंधविश्वासी और पतित बताया ताकि ईसाई धर्म के प्रचार को उचित ठहराया जा सके।

3. औपनिवेशिक इतिहास लेखन के प्रभाव

1. **भारतीय अतीत की विकृत छवि:**
भारतीय इतिहास को तीन कालों—हिंदू, मुस्लिम और ब्रिटिश—में बाँटकर सांप्रदायिक दृष्टिकोण को जन्म दिया गया।
2. **भारतीय राष्ट्रियता के उभरने की प्रेरणा:**
हालांकि यह इतिहास भारतीयों को नीचा दिखाने के लिए लिखा गया था, परंतु प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीय इतिहासकारों (जैसे आर.सी. मजूमदार, के.पी. जायसवाल, विष्णु शास्त्री चिपलूणकर) ने *राष्ट्रवादी इतिहास लेखन* की शुरुआत की।
3. **शैक्षिक संस्थानों पर प्रभाव:**
विश्वविद्यालयों में इतिहास की वही औपनिवेशिक रूपरेखा पढ़ाई जाने लगी, जिसने भारतीयों के आत्मबोध को प्रभावित किया।

4. सांप्रदायिकता और विभाजन की जड़ें:

औपनिवेशिक इतिहास ने धार्मिक भेदों को बढ़ाया, जिसका परिणाम आगे चलकर भारतीय समाज के सांप्रदायिक तनावों और विभाजन में दिखा।

4. आलोचनात्मक टिप्पणी

औपनिवेशिक इतिहास लेखन ज्ञान के नाम पर *सत्ता के औजार* के रूप में कार्य करता था। यह “इतिहास” नहीं बल्कि “औपनिवेशिक विमर्श” (Colonial Discourse) था, जिसने भारतीयता, स्वराज और आत्मगौरव को दबाने का प्रयास किया। परंतु, इसके प्रतिरोध में ही भारतीय इतिहास लेखन में राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, उपनिवेश-विरोधी और उपालंभात्मक (Subaltern) दृष्टियाँ विकसित हुईं।

निष्कर्ष

औपनिवेशिक इतिहास लेखन ने भारतीय इतिहास की संरचना और अध्ययन पद्धति दोनों को गहराई से प्रभावित किया। इसके नकारात्मक परिणामों के बावजूद, इसने भारतीय इतिहासकारों को आत्मसमीक्षा और अपनी दृष्टि से इतिहास लिखने की प्रेरणा दी।

संक्षेप में:

औपनिवेशिक इतिहास लेखन एक राजनीतिक उपकरण था, जिसने भारत के गौरवशाली अतीत को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया। किंतु उसी के विरोध से भारतीय इतिहास में *राष्ट्रवादी चेतना* का जन्म हुआ।